"हरियाणवी लोकनाटय (सांगों) में राष्ट्रीय चेतना"

डॉ बलजीत सिंह

सहायक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग

एस.ए. जैन महाविद्यालय, अंबाला शहर

राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति अपनी मातृ भूमि को अपनी माता के समान सुसेव्य एंव वंदनीय मानता है। अथर्ववेद के 'भूमिसूक्त' में भी तो यही कहा गया है। 'माता भूमिरू पुत्रो हं पृथिव्यारू' अर्थात भूमि माता है और हम उसकी गोदी में किलकारी भरने वाले उसके पुत्र हैं। अपनी मातृभूमि की सोंधी माटी के एक–एक कण का सुखद स्पर्श चंदन के कोटि–कोटि अनुलेपों से अधिक सुखदाई होता है। अपनी मातृभूमि के प्रति अनन्य अनुराग (प्रेम) के कारण ही भगवान राम ने सोने की लंका के विपुल वैभव को तुच्छ एवं त्याज्य मानकर 'जननी जन्मभूमिश्च रवर्गादपि गरीयसी' का उद्घोष किया था। मनुष्य की यही अंतश्चेतना, मातृभूमि के प्रति उसकी यही ललाम, ललक, राष्ट्रीय प्रेम या राष्ट्रीयता की भावना कही जा सकती है ।जो देश की जनता को संगठित करती है, गुलामी के दिनों में स्वतंत्रता की चेतना फूँकती है, मुक्ति –संग्राम में मर मिटने का आह्वान करती है, और कवियों तथा रचनाकारों को अपने स्वरूहित, भाषा, जाति, धर्म आदि को परे रखकर स्वयं को राष्ट्र और राष्ट्र हित की रक्षा के लिए आंदोलन जगाने के लिए और राष्ट्र पर सर्वस्व समर्पण की भावना भरने वाली रचनाएं लिखने का प्रोत्साहन भी देती हैं। वर्षों पूर्व जब भारत गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था तब यही वह भावना थी जिसने भारतीयों को उन जंजीरों को तोड़ने का बल दिया।

हरियाणा का इतिहास प्राचीन काल से लेकर अब तक भारतीय सभ्यता की जन्म स्थली के रूप में अपनी अद्भुत पहचान रखता है। यहां की संस्कृति में अदम्य उत्साह, अनुपम धैर्य, अतुल शौर्य और अजेय वीरता के महान गुणों का समावेश मिलता है। वास्तव में हरियाणा का इतिहास शूरवीरों और स्वाभिमानी लोगों की कहानी कहता रहा है। यह क्षेत्र ही शक,

पल्लव, हूणो, तुर्कों, कुषाणों, मुगलों आदि के आक्रमण हो या, 1857 ईस्वी का स्वतंत्रता संग्राम हो, या उन्नीसवीं सदी के विश्वयुद्ध हो या फिर स्वतंत्रता के बाद की लड़ाइयां रही हो, हरियाणा के वीरों ने सदा ही अपने परंपरागत शौर्य और अजेय पोरुष का परिचय दिया है।

हरियाणा के लोकनाट्यकारों ने अपने लोकनाट्यों (सांगों) में तत्कालीन पराधीन भारत की दीन–दशा और अंग्रेजों के अत्याचारों का कच्चा–चिट्ठा खोला और आजादी दिलवाने वाले स्वतंत्रता सेनानियों को अपने सांगों का नायक बनाकर रचना की और अपने देशवासियों में राष्ट्रप्रेम एवं कर्तव्य बोध की भावना का खूब प्रचार व प्रसार किया।

तत्कालीन लोक कवियों पंडित मांगेराम, फौजी मेहर सिंह, दयाचंद मायणा, हरिकेश पटवारी, मुंशीराम जांडली, भारत भूषण सांघीवाल, पंडित जगन्नाथ, डॉक्टर चतुर्भुज बंसल, ज्ञानी राम, बलबीर शर्मा आदि सभी लोक कवियों ने राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण सांगों की रचना की है।

भारत भूषण सांघीवाल जी ने 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई' अमर शहीद राव तुलाराम, नेता जी सुभाष चंद्र बोस, आजादी के परवाने सरदार उधम सिंह, अमर शहीद भगत सिंह, मर्दानी छोरी कमला आदि सांगों की रचना की जो राष्ट्रीय चेतना से भरपूर है।

सांग लक्ष्मीबाई का राष्ट्रप्रेम, पराक्रम और कुर्बानी पाठकों के रोम–रोम को रोमांचित कर देते हैं–

"जुल्म देख अंग्रेजाँ के अब लगी सोचने यों राणी
इस जीणे से मरणा आच्छा क्यूँ नै दे द्यू कुर्बानी
बलिदान बिना नहीं मिलेगी भारत मां को आजादी
जालिम गोरे कर देंगे यों हिन्दवतन की बर्बादी
बिगुल बजा युद्ध का रण मै कूद पड़ी थी मर्दानी
नहीं कहीं भी आज तक हुई जैसी झांसी की रानी"

अमर शहीद उधम सिंह सांग में जब उनकी शादी की बात चली तो उन्होंने कहा मेरी शादी सबसे अलग होगी–

"अंग्रेजाँ के वारटां नै समझ टेवा दिल बहलाऊँ
हथकड़ियां नै समझ कांगणा भाई अपणे हाथ सजाऊं
हिंद देश के वीर जवाना की मैं रै जनेत चढ़ाऊँ
जेल जिसकी डांडलवासा, इसा बनडा बणना चाहूं

जिनै देखै सकल जहान, बहु मैं आजादी नै ब्याहू"

कवि ने हरियाणवी संस्कृति के विवाह संस्कार को मूर्तिमान कर दिया। टेवा, कांगणा, जणेत, डांडलवासा, बहु आदि सबकुछ रागनी की एक ही कली में समाहित कर दिया

सांग अमर शहीद राव तुलाराम में जब 1857 की क्रांति सफल नहीं हुई उसके बाद

तेईस सितम्बर ठारां सो तेरेसठ ईस्वी सन था भरी जवानी
राम तुलाराव काबूल के माह देगे थे यह आपणी कुर्बानी
त्याग, तपस्या, शूरवीरता, देश प्रेम की यह कहानी
सांघीवाल शहीदों की गाथा चाहिए सुणनी और सुणानी।

लोक कवि फौजी मेहर सिंह जो स्वंय फौज में थे और देश रक्षा करते–करते अपने प्राण देश पर न्योछावर कर दिए और घायल अवस्था में भी उनकी अंतिम रागनी–

साथ रहणिया संग के साथी दया मेरे पै फेर दियो
देश के ऊपर जान झोक दी लिख चिट्ठी मै गेर दियो।
मेरी लाजवन्ती नै जाकै कहियो, नहीं फिकर मै गात करै
या तो माहरी इज्जत सै कदे मामूली सी बात करै
कोण किसे की गेल्या आया कोण किसे का साथ करै
एक दिन सब नै मरणा होगा क्यू चिंता दिन–रात करै
जिसकी गेल्या खाई खेली– छोड़ सजन की मेहर दियो।

लोक कवि दयाचन्द मायणा ने सांग सुभाष चंद्र बोस में जब सुभाष जर्मन गए और हिटलर से मिले–

घड़ी ना बीती ना पल गुजरे उतरे जहाज सिकर तै रै
बरसण लागे फूल बोस पै हाथ मिले हिटलर तै रै।

पंडित मांगे राम जी का लोककाव्य देश प्रेम एवं राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत है। भारत की परतंत्रता ने पंडित जी के हृदय को बहुत कचोटा है अंग्रेजों ने यहां की भोली–भाली जनता का शोषण किया और जाते–जाते यहां फूट के बीच भी बिखेर गए एक रागणी

कलुकाल के पहरे मै धन–धान चोरी होगे

मां के जाए भाइयाँ के सब इमान चोरी होगे
अंग्रेजा नै आण कै एक नई चाल चाल्ली
दिल्ली के मांह बैठ म्हारा देश करया खाली
सब राहयां तै तंग होगे हम छागी कंगाली
हिंदू–मुस्लिम दो भाई थे पाड़ दी लाली
करे भारत के दो टुकड़े पाकिस्तान चोरी होगे।

सांग भगत सिंह में ऐसा लगता है भगत सिंह की मां नहीं स्वंय भारत माता उसे उदघोषित कर रही हो।

"सौ–सौ पड़ै मुश्बित बेटा उमर जवान मै
भगत सिंह कदे जी घबराज्या बंद मकान मैं
हिंदवासी ढंग नया करेंगे बढ़ाई तेरी करया करेंगे
मनै शेर की मां कहया करेंगे हिंदुस्तान मै
ज्ञानी राम जी की देशभक्ति की बानगी देखिए
"मेरे देश के वीरों की रही सदा परिपाटी
दे दिया अपना खून नहीं दी इस भारत की माटी"।

लोक कवि बलबीर शर्मा–

"भारत मां के लाल हिन्द की कर ऊंची जग मै श्यान गए
चरणों में प्रणाम वतन पै जितने हो कुर्बान गए" ।

हरिकेश पटवारी

"नेताजी सुभाष बोस तेरी सारा हिंद करै बढ़ाई
कलयुग के अवतार तन्नै भारत की फंद छुड़ाई"।

पंडित जगन्नाथरू

"भारत देश हमारे की जग में ऊंची श्यान है
नतमस्तक उन वीरों को जिनका ये बलिदान है"।

डाक्टर चतुर्भुज बंसल

"जिनके कारण खिलरैया आज ये सारा चमन
दे गए कुर्बानी जो उन शहीदों को नमन"।

स्वतंत्रता आंदोलन में देशभक्त लोगों की कुर्बानियों के परिणाम

स्वरूप भारत को स्वतंत्रता मिली। लौह पुरुष सरदार पटेल जैसे दृढ़ प्रतिज्ञ लोगों की दूरदर्शिता फलवती हुई तथा भारत की विभिन्न रियासतों को समाप्त करके एकता के सूत्र में पिरोया गया। पंडित मांगेराम ने रागनी में चित्रण इस प्रकार किया

बड़े–बड़े घर घाल दिए इस मारकाट कटखाणी नै
नेहरू और महात्मा गांधी गंगा जी मै जो बोगे
कानूनी लड़ी लड़ाई अंग्रेज राज तै मुह धोगे
साढे छरू सो राजा थे जो देख कर्म नै छो होगे
ऐसे हाथ दिखा दिए सब तै बेदखली हो कै सोगे
इब राजे हाण्डैं दूध बेचते होटल खोल्या राणी नै।

आजादी के बाद स्वतंत्रता प्राप्ति पर खुशी प्रकट करते हुए मुंशी राम जांडली–

सन सैंतालीस पंद्रा तारीख अगस्त महीना आग्या
तीन रंगों का म्हारा तिरंगा आसमान में छाग्या

पहली बार जब लाल किले पर भारत का तिरंगा झंडा फहराया गया लोक कवि मुंशीराम जांडली के विचार–

लाल किले पर झंडा चढ़ग्या सब नै खुशी मनाई
है रै सुणल्यो भाइ यो हिन्द आजादी आई।

मुंशी राम जांडली के सपने मैं सुभाषरू–

सुपने के मैं आया चंद्र बोस दिखाई दे
नेताजी की जीत यवन बेहोश दिखाई दे
जणो आजादी की पलटन ले रहया
हिंद मैं निकला सूरज सवेरा
जंग के लेक्चर देरया भरया रोष दिखाई दे।

आजादी के बाद जब कभी देश पर संकट के बादल मंडराए, विदेशियों ने भारत पर अपनी कुदृष्टि डाली तो पंडित मांगेराम के ह्रदय से विरोचित वाणी फूट पड़ी। सन 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया तो यह रागणी देश के कोने–कोने में वेद–मंत्रों की तरह गूंजने लगी–

बरछी तीर कटारी ल्यादे पैने मुंह की सेल
ले चल साजन हमनै भी फौज मै गेल
चीनी दुश्मन खड़या पहाड़ पै धन लूटै
बीर मर्द हो साथ मोर्चा ज्यब टूटै
भर–भर गैलन गेरांगी हम मोटारां मै तेल।

इस प्रकार हरियाणवी लोक नाटककारों ने अपने सांगों में अपने देश की भूमि के प्रति अटूट श्रद्धा व अनुराग की भावना का पालन कर देश प्रेम का निर्वाह किया तथा उस भूमि पर रहने वाले व्यक्तियों में एकता की भावना को उत्पन्न करते हुए उसे उन्नति के शिखर की ओर ले जाने का कार्य किया और यही राष्ट्रीयता का भाव है। देश की वंदना, गौरव गान, प्राचीन संस्कृति पर अभिमान आदि देश प्रेम की भावना को उद्दीप्त करते हैं, जबकि देश का सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक उत्थान राष्ट्रीयता को पुष्ट करता है।

संदर्भ सूची

1 रामफल चहल, रघुबीर सिंह मंथाना, फौजी मेहर सिंह पृ – 45
2 डाव पूर्ण चंद शर्मा, पंडित मांगेराम ग्रंथावली पृ दृ 39–40
3 भारत भूषण सांघीवाल, हरियाणवी काव्य ग्रंथावली संव डाव रामपत यादव पृ दृ 415–16
4 स्वर्गीय पंडित हरिकेश पटवारी, आजादी की झलक पृ दृ 36
5 डाव पूर्ण चंद शर्मा, स्वर्णिम हरियाणा पृ दृ 15–28
6 मुंशी राम जांडली ग्रंथावली डाव राजेंद्र बडगुजर पृ दृ 23